एम.एच.डी.–04 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.) online
पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–04
नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2024 एवं जनवरी 2025 सत्रों के लिए)

जुलाई–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2025
जनवरी–2025 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2025

इग्नू
जन–जन का विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068

सत्रीय कार्य
2024–2025

पाठ्यक्रम कोड एम.एच.डी. 04/2024–2025

प्रिय छात्र/छात्राओ!

'नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। उददेश्य सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए ।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

    अनुक्रमांक : ....

    नाम : ....

    पता : ....

    ....

    पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

    सत्रीय कार्य कोड : ....

    अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

    दिनांक : ....

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और <u>अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।</u>

7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें ।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :

जुलाई–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2025
जनवरी–2025 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 सितम्बर, 2025

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं।

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ कमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए। एक प्रश्न में आपको कहानियों से लिए गए कुछ गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करनी है। इसके लिए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और संदर्भ सहित व्याख्या करें।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

1. **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
2. **विशेष :** अपने उत्तर की फोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य हैं अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य (2024–2025)
एम.एच.डी.–04
नाटक एवं अन्य गद्य विधाएं

पाठ्यक्रम कोड एम.एच.डी. 04/2024–2025
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी. 04 / टी.एम.ए. / 2024–25
कुल अंक : 100

खंड–1

1. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 4X10=40

(क). संस्कृति थी यह एक बूढ़े और अंधे की जिसकी संतानों ने महायुद्ध घोषित किए, जिसके अंधेपन में मर्यादा गलित अंग वेश्या–सी प्रजाजनों को भी रोगी बनाती फिरी उस अंधी संस्कृति, उस रोगी मर्यादा की रक्षा हम करते रहे सत्रह दिन।

(ख). कविता करना अनंत पुण्य का फल है। इस दुराशा और अनंत उत्कंठा से कवि–जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई। संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा। परंतु कैसी विडंबना! लक्ष्मी के लालों का भ्रू–भंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या! एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन, जो दूसरों की दया में अपना अस्तित्व रखता है! संचित हृदय कोश के अमूल्य रत्नों की उदारता और दारिद्रय का व्यंग्यात्मक कठोर अट्टहास, दोनों की विषमता की कौन–सी व्यवस्था होगी।

(ग). चना खावैं तौकी, मैना।
बोलैं अच्छा बना चबैना।।
चना खायें गफूरन, मुन्नी।
बोलैं और नहीं कुछ सुन्ना।।
चना खाते सब बंगाली।
जिनकी धोती ढीली–ढाली।।
चना खाते मियाँ जुलाहे।
डाढ़ी हिलती गाह बगाहे।।
चना हाकिम सब जो खाते।
सब पर दूना टिकस लगाते।।
चने जोर गरम–टके सेर।

(घ). ऐसा जीवन तो विडंबना है, जिसके लिए रात–दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद–शशि का विलास हो, तब भी दांत–पर–दांत रखे मुट्ठियों को बांधे लाल आंखों से एक–दूसरे को घूरा करें! बसंत के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहाकर लाल कर दिया जाय! नहीं–नहीं, चक्र! मेरी समझ में मानव–जीवन का यही उद्देश्य नहीं है। कोई और भी निगूढ़ रहस्य है चाहे मैं स्वयं उसे न जान सका हूँ।

2. सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'अंधेर नगरी' नाटक की समीक्षा कीजिए। 10

3. जयशंकर प्रसाद के नाटक और रंगमंच संबंधी निबंधों के आधार पर उनकी नाट्य दृष्टि पर विचार कीजिए। 10

4. ''अंधायुग' अंधों के बहाने ज्योति की कथा है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 10

5. 'कलम का सिपाही' जीवनी के शिल्पगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए। 4X5=20

(क) 'ताँबे के कीड़े' की कथावस्तु

(ख) 'लोभ और प्रीति' की विशेषताएँ

(ग) 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की संरचनात्मक विशेषताएँ

(घ) अदम्य जीवन : मूल संवेदना